Anusandhanvallari
Vol 2026, No.1
April 2026
ISSN 2229-3388

‘पर्यावरण वमर्श’ : चुनी हुई क वता के संदर्भ में

Dr. Salini. C
Associate Professor of Hindi
Dept of Hindi
Govt college for women, Thiruvananthapuram

‘पर्यावरण’ शब्द संस्कृत भाषा के ‘परी’ उपसर्ग और ‘आवरण’ शब्द के योग से बना हुआ है। यह अग्रेज़ी भाषा के 'Environment' शब्द का पर्यायवाची शब्द है। इसका अर्थ है बहुत व्यापक और वस्तृत इसके अर्न्तगत हमारे चारों ओर का वातावरण आते है। हमारे चारों ओर का प्राकृ तक पदार्थ, वनस्प त और जीवन-जगत् आ द सबकुछ इसके अर्न्तगत आते है। इन सबके बीच जब सन्तु±न होगा, तब पर्यावरण सुखद एवं स्वस्थ रहेगा। कहते है क पर्यावरण का सीधा संबन्ध प्रकृ त से है। प्रकृ त में जै वक और अजै वक संघटक भी है। हमारे चारों ओर सूक्ष्म जीवाणू, कीडे-मर्कोडे, और पेड-पौधे आ द है। ये सब जै वक संघटक के अर्न्तगत आते है तो चट्टानें, पर्वत, और न दयाँ अजै वक संघटकों के अर्न्तगत आते हैं।

‘प रस्थि तकी’ वज्ञान का मत±ब है - जसमें व भन्न जीव-जन्तुओं का एवं उनके पारस्प रक संबन्धों का अध्ययन है। इसमें वातावरण या प रवेश का प्रमुख स्थान है। व भन्न जीव-जन्तुओं अ±ग-अ±ग वातावरण में रहते है। वातावरण में आनेवा± प रवर्तन जीव- जन्तुओं के जीवन में भी उसका प्रभाव डा±ता है। ये जीव-जन्तुओं अपने वातावरण के साथ एक वशेष प्रकार का संबन्ध स्था पत करते है। इसे पा रस्थि तक तंत्र कहते है। जीव-जन्तुओं और उनके वातावरण के बीच के इस संबन्ध को ‘प रस्थि तकी’ कहते है।

वेद, उप नषद, पुराण और महाभारत में प्रकृ त और पर्यावरण के बारे में कह दया है। संस्कृत, न और बौद्ध सा हत्य में भी पर्यावरण के बारे में खूब चर्चा की है। मनुष्य और प्रकृ त के आँगन में पुष्पित और प±वत होता है।

Available online at https://www.psvmkendra.com

वेद, उप नषद, पुराण और महाभारत में प्रकृ त और महाभारत में प्रकृ त और पर्यावरण के बारे में कह दया है। संस्कृत, जैन और बौद्ध सा हत्य में भी पर्यावरण के बारे में खूब चर्चा की है। मनुष्य और प्रकृ त का ध नष्ठ संबन्ध है। मानव का जीवन प्रकृ त के आँगन में पुष्पित और प±± वत होता है। प्राणदा यनी प्रकृ त मनुष्य की सदा प्रेरक एवं आकर्षण का प्रमुख केन्द्र बना रही है। भारतीय सा हत्य में प्रकृ त का उपदे शका के रूप में प्राचीन-का± से ही च±ा आ रही है। पर्यावरण का प्रभाव व्य क्त के मान सक एवं बौ द्धक वकास को प्रभा वत करता है। हर रचनाकार हमेशा प्रकृ त को प्रेम करते है। प्रकृ त उनके सुख-दुख की सहचरी रही है।

पर्यावरण सुरक्षा का महत्व वै दक सा हत्य में ही नहीं हन्दी सा हत्य के आ दका± एवं मद्यका± में भी अं कत की है। जहाँ पेड़-पौधों और न दयों व सरोवरों की उपासना के महत्व पर प्रकाश डा±ा गया है। सा हत्यकार कहते है क थे पर्यावरणीय घटक वास्तव में साधु-संतों के समान है क्यों क जो अपना सबकुछ देकर हम±ोगों का पा±न करते है। पेड़-पौधो ता±ाब ता±ाब, और बाद± आ द परम अर्थ को सू चत करते है। फर हम स्वयं की रक्षा के±ए इनकी संरक्षण प्रदान करते है। कबीरदास जी भी प्रकृ त घटकों की परमार्थ सेवा को उद्घृत करते है -

जैसे - "वृक्ष कबद्दु व फ± भखै
नदी न संचै नीर,
परमारथ के कारणों साधुन
धरा शरीर।।"

Available online at https://www.psvmkendra.com

आधु नक क वयों के क वता में भी पर्यावरण वमर्श है। जैसे ‘‘धरती, गंगास्नान, गंगा को प्यार पानी की प्रार्थना, उस दन का जंग±ा, पेड और ह रया±ी है एक पत्ती का खो जाना’’ जैसे अन्य अनेक ‘क वताओं में पर्यावरण वमर्श है।

नागार्जुन की प्र सद्ध क वता है ‘धरती’। इस क वता में प्रकृ त और मनुष्य के बीच में अटूट होने वा± संबन्ध का चत्रण है। हमारी प्राचीन संस्कृ त एवं सभ्यता में हम जैसे मानव प्रकृ त को माता कहते है। दोहन और पोषण ही हमारी संस्कृ त का मू± आधार बनी रही।±कन आज हम प्रकृ त को आदर नहीं करते थे। आज के मानव मन में प्रकृ त को शोषण करने का इच्छा है। यह ज़न्दगी अ धक से अ धक तेज़ी से बढती जा रही है। आ वष्कार के क्षेत्र में मानव क±ाण का साधन मात्र नहीं है। यह तो मानव जा त के सर्वनाश का प्रमुख कारण बन सकते है। हम प्रग त की अन्धी दौड़ में पृथ्वी को भू± जाते है। क व कहते है क -

‘‘धरती धरती है,
पन्हाई हुई गाय नहीं
क चर से दुह±ी
कं टया भर दूध।।’’

प्रस्तुत क वता में क व आटोमोबाइ± शब्द के द्वारा भौ तकता की अ भव्य क्त की है। आज के व्यस्त मनुष्य अपनी भाग-दौड़ में कृ त्रमता, कपटता, हृदयहीनता आ द अनेक वशेषताओं को प्रकट करने के±ए आटोमोबाइ± शब्द की प्रयोग की है। हमने प्रकृ त तथा पर्यावरण को सदा चूजा एवं अचंना करती थी।

Available online at https://www.psvmkendra.com

सर्वसहनशी±ता धरती हमको पुत्रवत् जैसे पा±न-पोषण करती है। धरती नाश का नहीं नर्माण का प्रतीक है। ले±कन इस प्रकृ त के दुर्ब±ा प्राणी मानव आधुनक एवंनवीन मशीनोंका आ वष्कार सेसब± होगए थे। ऐसी वस्फोटनात्मक चीज़ें बनाकर प्रकृ त या पर्यावरण को संभा±ने की ज़म्मेदारी से हटकर प्रकृ त को सर्वनाश करते है। मानव की अस्मिता प्रकृ त के वरोध में खडे होकर सदा शोषण करते है।

जैसे - "सच± अच± वस्तुओं की जननी,

सर्वसहनशी±ाा अन्नपूर्णा वसुन्धरा।।"

धरती की सर्वसहन शी±ता का प रचय देत्ाा है सबकी जननी है, माँ है, साथ ही साथ अन्न देन्ोवा±ी भी है। यह कह कर वसुन्धरा को यानी धरती को अपनी शब्दों से क व स्तुती की है।

केदारनाथ सिंह की प्र सद्ध क वता है "पानी की प्रार्थना। प्रस्तुत क वता में ज± प्रदूष्ाण जैसे वकट समस्या की ओर उजागर करती है। ज± के उपयोग में भी मानव क्रूर बन जाते है। पह± क व कहते है क ज± को प वत्र एवं पूजनीय माननीय होना चा हए। ज± की हर एक बून्द के प्र त श्रद्धा और संवेदना का रश्ता होना चा हए। प्रस्तुत क वता में मानव और पानी के बीच में होनेवा±ा अटूट संबन्ध का सुन्दर एवं मनोहा रक चत्रण की है। क व कहते है क प्राकृ तक दोहन का ख मयाज़ा इस धरती के सभी प्रा णयों को भुगतना पडता है। प्रकृ त और मानव जीवन इतना धु±- म± है क एक को दूसरे से अ±ग करना संभव नहीं। मनुष्य प्रकृ त की गोद में पहूँचकर सुख-दुख एवं आनंद पाना चाहता है। उसी प्रकार प्रकृ त के अन्य जीव-जन्तुओं भी प्रकृ त

Available online at https://www.psvmkendra.com

याना अपनी माता की गोद में आकर सुख एवं दुख की अनुभू त पा सकते है।

जैसे - क± एक वो आयी
और बैठ गयी मेरी बाजू में
पह± चौंककर उसने इधर-उधर देख ा
फर अपनी±म्बी चोंच गडा दी मेरे सीने में।
और वह मुझे अच्छा±गा रह प्रभू,
±गता रहा जैसे घूँट-घूँट
मेरा जन्मान्तर हो रहा है
एक ची± के कंठ में
कंठ से रक्त में
रक्त से फर एक नयी ची± में।।

प्रस्तुत पं क्तयों में एक ची± और पानी का सुन्दर चत्रण कया है। ची± नदी के कनारे आते वक्त इधर-उधर देखने के बाद वह अपनी±म्बी चोंचों से पानी पीते है। ची± संतुष्ट हो जाते है और पानी भी। पानी ची± के कंठ से रक्त में रक्त से पूरे शरीर में व्याप्त हो कर नयी ची± के रूप में पैदा होता है। यह तो जन्म-जन्मान्तर का कार्य है। प्रस्तुत क वता में क व पक्षी, पशु और मानव के व्यवहार के बारे में भी कदम उठाते है।

अना मका जी की प्र सद्ध क वता है "ह रया±ी है एक पत्ती का खो जाना"। प्रस्तुत क वता में प्रकृ त और पर्यावरण के बारे में कया है।

कसी ठूँठ पर
पत्ती के

Available online at https://www.psvmkendra.com

फर फूट पडने की।

यही धमक

सुनती हूँ गयी रात

ओरत टपकती है जब

दु नया की हर ठूँठ परा।''

प्रंस्तुत क वता में कव यत्री मानव-मन में होनेवा‡ संघर्ष का चत्रण की है।

ज्ञानेन्द्रप त जी की प्र सद्ध क वता है ''गंगा स्नान।'' प्रस्तुत क वता में एक बूढी मैया ने अपनी ववशता को भू‡कर बेटे और बहू की हाथ पकडकर आथी गंगा तट पर। अपनी पापों से मु क्त म‡ाने के‡ए गंगा नदी में स्नान करने के‡ए बगड्ते पैरों हुए से वह आयी है। अपनी जीवन को नर्म‡ बनाने के‡ए उस प वत्र नदी में नहाना तो बडी बात है। यह तो आधु नक समाज में जीनेवा‡ नई पीढ़ी को जानते थे। पुराने पीढी के‡ए गंगा केव‡ एक नदी नहीं ब‡ि‡क अपनी संस्कारों का प्रतीक है।

जैसे : गंगा में स्नान कर रही,
वह बूढ़ी मैया,
दो ओर से बाँहें पकडे, बेटे-बहू को‡ए,
सी ढयाँ उतरती,
आयी थी ज‡ तक जो कूकती-कहरती
नहुरी-दुहरी
वह बूढी मेंया दूर से आयी
तुम क्या जानो

Available online at https://www.psvmkendra.com

अपने को प्राणों तक प्रक्षा‡त कर रही है,

प वत्र कर रही है।

आज की नयी पीढी गंगा ऐसी पुण्य नदी को अप वत्र मानकर दू षत एवं वषाक्त बन गयी है।

पेड़ क वता में पेड़ का हरेपन का चत्रण कया है। पेड और मानव का जीवन भी एक जैसे है। वे कहते है क हरेपन और युवावस्था में भी हम सबको सब कुछ है,‡कन बूढापन की अवस्था में हम सब अके‡पन में पड जाते है।

जैसे - "तुम पेड़, उसी वक्त तक

पडे हो

जब तक ये हरे पत्ते

ह‡ रहे है

तुम्हारी टह नयो पर।।"

यहाँ क व पेड़ के माध्यम से जीवन का चत्रण कया गया है। मनुष्य और प्रकृ त के बीच अटूट संबन्ध है।

'उस दन का जंग‡' क वता, में अतीत और वर्तमान एक साथ उपस्थित कया गया है। पुराना कभी भी पुराना नहीं होता वह हर नये को जन्म देता है। इस क वता में अतीत का पतझ़र है, जसकी प त्तयाँ आज भी झडती जा रही है। कन्तु वह सुखमयता और सुन्दर भी था।

" पछ‡ पतझ़र में

हम कतने रोशन थे,

जैसे उजा‡ के दो पेड।"

Available online at https://www.psvmkendra.com

प्रस्तुत क वता में पर्यावरण के नये संदर्भ है। इस क वता में जंग± में पुरानी पीढी का भी प्रतीक है। जो सबको आश्रय देत ी है। मनुष्य ही नहीं पशु-

पक्षी सबको आश्रय देती है। उसमें एक नयेपन को स्वीकारने का गुण भी है।

'गंगा को प्यार' क वता में क व गंगा नदी की प वत्रता एवं हमारी संस्कृ त के बारे में कह गया है।

"देर तक बैठा रहा
गंगा कनारे
ग्रीष्म का नी± आकाश
कुछ ज्यादा ऊपर उठा हुआ।
और हवा बस इतनी क
भरा±गे सब कुछ।।"

क व कहते है क हमारा अस्तित्व और जीवन का आधार भी गंगा है।

प्रस्तुत क वताओं में पय वरण और उसके संबन्धित अनेक समस्याये भी है। पैसे के पीछे दौडनेवा± मानव, अपनी खाता में पैसे भरने की स्वार्थता आ द का चत्रण-भी है। दान के रुप में म±नेवा± प्राकृ तक संसाधनों का नाश करना ही मानव का उद्देश्य रहा। संक्षेप में हम कह सकते है क हन्दी सा हत्य की आधु नक क वता में पर्यावरण है प्रकृ त है और पर्यावरण वमर्श भी है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. धरती - मागर्जुन ा - पृ. संख्या - 95
2. पानी की प्रार्थना - केदारनाथ सिंह - संख्या - 100

Available online at https://www.psvmkendra.com

3. गंगा स्नान - ज्ञानेद्रप त - पृ.सं - 118

4. पेड - ओमप्रकाश वा±मी क, पृ.सं. 123

5. उस दन जंग± का -±ी±धर जगूडी, पृ.सं. 107

6. गागा को प्यार - अरुण कम±, पृ.सं. 111

सहायक ग्रन्थ सूची

1. पा रस्थि तक पाठ और हन्दी सा हत्य - डॉ. सुमा एस, डॉ. एस.आर जयश्री।

2. पर्यावरण वमर्श

Available online at https://www.psvmkendra.com